विश्व न्याय मन्दिर

5 दिसम्बर 2013

विश्व के बहाईयों को

परम प्रिय मित्रों,

ठीक एक सौ वर्ष पूर्व आज के दिन, मिस्र एवं पश्चिम की अपनी "युगांतरकारी यात्राओं" की समाप्ति पर जब अब्दुल-बहा पावन भूमि पहुँचे, तब उन्होंने किसी समारोह या धूमधाम से उसी प्रकार परहेज़ किया, जिस प्रकार उन्होंने अपने प्रस्थान के समय किया था। लेकिन उनके जाने और लौटने के बीच, बहाई इतिहास में एक निर्णायक काल प्रकट हो चुका था -- शोग़ी एफ़ेन्दी के शब्दों में, यह एक ऐसा "महिमाशाली अध्याय" था जिसके दौरान "पश्चिम की उपजाऊ भूमि में स्वयं संविदा के केन्द्र के हाथों अकल्पित अन्तःशक्ति वाले बीज" बोये गये थे।"

अब्दुल-बहा की यात्राओं और उन लोगों पर उनके प्रभाव के किस्से जो उनसे मिले थे, असंख्य हैं। उनकी उपस्थिति में प्रवेश करने के लिये कुछ लोग तो असाधारण हद तक गये -- जैसे कि नौका से जाना, पैदल जाना, यहाँ तक कि ट्रेन के नीचे लटक कर जाना -- और उन्हें देखने की अपनी गहरी चाह के कारण, वयस्कों और बच्चों की भावी पीढ़ियों के मन पर अपनी छाप छोड़ गये। उन लोगों के बयान आज भी अत्यन्त भावोत्तेजक हैं जो अपने परम प्रिय मास्टर के साथ केवल एक संक्षिप्त, या कभी-कभी लगभग मौन मुलाकात के बाद बिल्कुल बदल गये। उनसे मिलने आने वाले विभिन्न प्रकार के आगंतुकों -- अमीर और गरीब, काले और गोरे, स्वदेशी और प्रवासी -- में उनके पिता के धर्म का सार्वभौमिक आलिंगन स्पष्टतः प्रमाणित था। इस अवधि के अन्तर्गत अब्दुल-बहा ने जो कार्य निष्पादित किया था उसकी सम्पूर्ण प्रसार की पर्याप्त थाह लेना असम्भव है। कई बीज जो उन्होंने बोये, और जिन्हें उन्होंने एक ऐसे विस्तृत पत्राचार के द्वारा परिपक्वता की ओर पोषित किया, जो उन्होंने अपने जीवन के अन्त तक जारी रखा, एक दृढ़ समुदाय के रूप में फलने-फूलने वाले थे, जो आने वाले वर्षों में कार्य का भारी बोझ वहन करने में, राष्ट्रीय बहाई प्रशासन के प्रथम ढाँचों का समर्थन करने में तथा अब्दुल-बहा की इस आकांक्षा पर अमल करना आरम्भ करने में सक्षम था, कि दिव्य शिक्षाओं को प्रत्येक शहर और तट तक पहुँचाया जाये।

इस शतवार्षिकी अवधि के दौरान निस्संदेह मित्रों ने इन बिन्दुओं को याद किया है और इसके साथ ही बहुत कुछ और भी किया है। जैसा कि हमने आशा की थी, उन्होंने,

मास्टर के सप्रभाव उदाहरण एवं सर्वकालिक परामर्शों से प्रेरणा प्राप्त करते हुए, अपने समक्ष मौजूद कार्य पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है। हमें यह देख कर प्रसन्नता हुई है कि किस प्रकार, विशेषकर, बच्चों और किशोरों को आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करने के प्रयास फले-फूले हैं। मशरिकुल-अज़कार की संस्था स्थापित करने का कार्य, जिसके विलक्षण महत्व पर अब्दुल-बहा ने संयुक्त-राज्य की अपनी यात्रा के दौरान इतने सारगर्भित ढंग से बल दिया था, आठ देशों में आगे बढ़ रहा है, जबकि सभी देशों में, भक्तिपरक बैठकें -- जो कि धर्मपरायण जीवन का एक सामुदायिक पहलू है -- बढ़ रही हैं। सामाजिक जीवन के साथ बहाई समुदाय के बढ़ते-हुए उस जुड़ाव में, जो उसे सभी प्रकार के औपचारिक और अनौपचारिक संवादों को एक ताज़ा परिप्रेक्ष्य प्रदान करने का अवसर प्रदान कर रहा है, इस युग की आवश्यकताओं के लिये अब्दुल-बहा की गहरी चिन्ता साफ़ गूँजती है। उन क्लस्टरों में जहाँ गतिविधि के स्तर एवं सघनता के कारण उत्पन्न माँगें सबसे अधिक महसूस हुई हैं, सीखने की एक क्रमिक एवं धीर प्रक्रिया के माध्यम से समन्वय की जटिलतर योजनाएँ उभर रही हैं। विश्व के कुछ क्षेत्रों में जहाँ संस्थाएँ विशेष पहलों की देखरेख कर रही हैं, सतत् विकास की नींव को मजबूत करने तथा एक समुदाय द्वारा जो प्राप्त किया जा सकता है उसकी सम्भावना को बढ़ाने में उत्सुक पायनियरों का एक प्रवाह सहायता प्रदान कर रहा है। विस्तार एवं सुगठन का कार्य उन असंख्य समर्पित आत्माओं के अविरत परिश्रम के माध्यम से आगे बढ़ रहा है जिन्होंने, त्याग की भूमि पर चलने में, कई मायनों में, अब्दुल-बहा का अनुसरण किया है। बहाउल्लाह द्वारा रची गयी संकल्पना की ओर अग्रसर होने में जनसमूहों की सहायता करने की एक विश्वव्यापी समुदाय की बढ़ी हुई क्षमता, ग्यारहवें अन्तर्राष्ट्रीय बहाई अधिवेशन में सुस्पष्ट रूप से ज़ाहिर थी। वही क्षमता प्रेरणा के क्षितिज नामक चलचित्र में सुस्पष्टतया चित्रित की गयी थी तथा प्रेरणा के क्षितिज से प्राप्त अन्तर्दृष्टियाँ, सम्बन्धी प्रलेख में विस्तारपूर्वक अन्वेषित की गयी थी, जिनसे न केवल विकास की गत्यात्मकता के बारे में बल्कि अनेक सामाजिक बुराइयों की जड़ों का उपचार करने के तरीकों के बारे में भी गहन चिन्तन को प्रोत्साहन मिला है। और इस तीन-वर्षीय अवधि के अंतिम महीनों में इस बात का सबसे शानदार प्रदर्शन देखा गया कि किस प्रकार वर्तमान पीढ़ी ने मानवजाति की सेवा के उस आह्वान का प्रत्युत्तर दिया जो विलक्षण रूप से मास्टर के व्यक्तित्व में सन्निहित था: दुनिया भर में दूर-दूर बिखरे हुए सौ से भी अधिक क्षेत्रों में आयोजित सम्मेलनों की एक चार-माही शृंखला में अस्सी हज़ार से अधिक युवाओं का एकत्रण।

यद्यपि प्रत्येक की अपनी ही अद्वितीय विशेषताएँ थीं, फिर भी सभी सम्मेलनों की आधारभूत विशेषताएँ समान थीं -- जैसे कि सावधानीपूर्वक की गयी तैयारियाँ, प्रत्येक सम्मेलन में प्रत्यक्ष रूप से देखी जाने वाली विचारों की एकता, और इससे उमड़ने वाली

ऊर्जा। भाग लेने के लिये प्रतिभागियों के कर्मठ प्रयासों में उनके द्वारा महसूस की गई प्रतिबद्धता की गहराई की झलक देखी गयी। कुछ ने अत्यल्प संसाधनों से आवश्यक धनराशि जुटाने के लिये बड़े त्याग से परिश्रम किया; अन्य प्रकरणों में, मित्रों ने इन आयोजनों के महान उद्देश्य एवं इनकी हितकारी प्रकृति के बारे में अधिकारियों को समझाकर उनसे व्यवस्थाओं के लिये विशेष अनुमति प्राप्त की। प्रतिभागियों को लाने के लिये नौवहन-परिवहन को मार्ग बदलने के लिये राज़ी किया गया, जबकि आयोजन स्थल तक पहुँचने के लिये कुछ युवा कई दिनों तक पैदल चले। अर्जित की गयी अन्तर्दृष्टियों, प्रकट की गयी रचनात्मकता, प्रत्येक अवसर पर व्यक्त किये गये मर्मस्पर्शी कथनों, और इन सब से अधिक, सेवा की गतिविधियों को मिलने वाले प्रेरक बल की रिपोर्टें प्रमाणित करती हैं कि इनमें उपस्थित सभी, उन आध्यात्मिक शक्तियों से प्रभावित हुए जो ऐसी किसी भी चीज़ से कहीं अधिक चिरस्थायी, कहीं अधिक गहराई से जड़वत् थीं जो कि केवल मिलाप के रोमांच और बड़ी संख्याओं से हासिल हो सकती हैं। यह अत्यन्त हर्ष की बात है कि तुच्छता के वशीभूत होने या सहज अनुरूपता स्वीकार करने के अनिच्छुक लाखों युवा, अब दूरगामी परिणामों वाले ऐसे संवाद एवं कार्य के प्रतिमान के फैलते हुए आलिंगन में लाये जा चुके हैं जो एक सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने तथा आध्यात्मिक एवं सामाजिक रूपान्तर का माध्यम बनने से सम्बन्धित है। इतनी विशाल संख्याओं को गतिशील एवं मार्गदर्शित करने तथा उनकी सहायता के लिये सहयोगियों का समूह तैयार करने के लिये, इन सम्मेलनों ने संस्थाओं से सहयोग के जिन नये स्तरों की मांग की; समुदाय की ओर से हार्दिक सामूहिक प्रयास की वह आवश्यकता जब उसने भागीदारी के दायरे को विस्तार से खोला एवं ऐसा करने के गहरे प्रभाव को देखा; व्यक्ति-विशेष द्वारा दर्शाई गई गंभीर प्रतिबद्धता, जो सम्मेलन की अध्ययन-सामग्री में समझायी गयी अवधारणाओं की सहायता से अब उन हज़ारों से जुड़ रहा है जो अन्य लाखों तक पहुँचने में जुटे हुए हैं -- इन सभी बातों ने, मिलकर, उन तीन नायकों की क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि करने में योगदान दिया है, जिन पर पाँच-वर्षीय योजना की सफलता निर्भर करती है। और जहाँ हम इस बात को स्वीकार करते हैं कि इस प्रगति में युवा सबसे आगे हैं, वहीं इसकी खास विशेषता यह रही कि इस अद्‌भुत घटना को समर्थन, प्रोत्साहन, एवं विजयी बनाने के लिये, समुदाय एक बनकर उठ खड़ा हुआ, और अब खुद को एक ऐसे अन्योन्याश्रित, जैविक इकाई, के रूप में प्रगति करते हुए देख कर हर्षित हो रहा है, जो इस दिवस की अनिवार्यताओं को पूरा करने के लिये अब अधिक तैयार है।

इन सभी बातों के मद्देनज़र, हमें यह स्वीकार करने में कोई हिचक नहीं है कि ये उपलब्धियाँ जो प्रकट कर रही हैं वह समूहों द्वारा प्रवेश की प्रक्रिया में एक ऐसी प्रगति है जो इससे पहले कभी अनुभव नहीं की गयी।

उस प्रयास के महत्व पर विचार करने के लिये, जिसमे 'सर्वमहान नाम' का समुदाय संलग्न है, जिसके उद्देश्य पर बल देने का प्रयत्न मास्टर ने अपनी यात्राओं के दौरान इतनी बार किया था, तथा उसके परिणाम में अपने हिस्से का योगदान देने में स्वयं को पुनः समर्पित करने के लिये हम सभी का आह्वान करते हैं। उन्होंने एक बार श्रोताओं से कहा था "ईश्वर की कृपा के तत्पर माध्यम बनने के लिये अपने पूरे हृदय से प्रयास कीजिये। क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि 'उन्होंने' तुम्हें पूरे विश्व में प्रेम के अपने संदेशवाहक बनने के लिये, मनुष्य के लिये 'उनके' आध्यात्मिक उपहारों के धारक बनने के लिये, पृथ्वी पर एकता एवं मैत्री फैलाने के साधन बनने के लिये चुना है।" एक अन्य अवसर पर उन्होंने कहा, "सम्भवतः, ईश्वर ने चाहा, तो यह भौतिक जगत एक स्वर्गिक दर्पण के समान बन जायेगा जिसमें हम देवत्व के चिन्हों की छाप देख सकेंगे, तथा मानव हृदयों में दीप्तिमान प्रेम की वास्तविकता से एक नई रचना के आधारभूत गुण प्रतिबिंबित हो सकेंगे।" अपने सभी प्रयास इस उद्देश्य की प्राप्त की दिशा में कीजिये। पाँच-वर्षीय योजना की शेष आधी अवधि के दौरान, उन हज़ारों क्लस्टरों में प्रभुधर्म की समाज-निर्माण की शक्ति प्रकट होनी चाहिये जहाँ विकास कार्यक्रम आरम्भ करने, सुदृढ़ करने, अथवा फैलाने की आवश्यकता है। बहाई संस्थाओं और उनकी एजेन्सियों के समक्ष चुनौती यह होगी कि वे उन सभी के साथ-साथ चलने के साधन मुहैया कराएँ जो एक बेहतर दुनिया की पवित्र एवं सच्ची चाह संजोए हुए हैं, चाहे आध्यात्मिक शिक्षा की प्रक्रिया में उनकी भागीदारी का स्तर अब तक कुछ भी रहा हो, और उस चाह को ऐसे व्यावहारिक कदमों में परिवर्तित करने में उनकी सहायता करें जो दिन-प्रतिदिन एवं सप्ताह दर सप्ताह जुड़कर, जीवंत, फलते-फूलते समुदाय निर्मित करें। इस समय पर कितना योग्य है कि युवाओं की एक पीढ़ी स्वयं के बल पर आयी है, और बढ़ती हुई ज़िम्मेदारी उठाने को तैयार है, क्योंकि वर्तमान कार्य में उसका योगदान आने वाले महीनों एवं वर्षों में निर्णायक सिद्ध होगा। पावन देहलीज पर, हम उस सर्वशक्तिशाली से विनती करेंगे कि वे उन सभी को शक्ति प्रदान करे जो इस विशाल उद्यम का हिस्सा होंगे, जो अपने स्वयं के आराम और विश्राम के समक्ष दूसरों की सच्ची समृद्धि को अधिक महत्व देते हैं, और कैसा होना चाहिये इसके दोषरहित आदर्श हेतु जिनकी दृष्टि अब्दुल-बहा पर केन्द्रित रहती है; यह सब कुछ इसलिये ताकि, "वे जो अंधकार में भटक रहे हैं, प्रकाश में आ जायें" और "वे जो बाहर कर दिये गये हैं, प्रभु-साम्राज्य के भीतरी वृत्त में शामिल हो जायें।"

-विश्व न्याय मन्दिर